

## ॥ श्री दुर्गा करुणास्तव स्तोत्र ॥

श्री श्री श्री श्री श्री १०००८ स्वामी शिशू सत्यविदेहानंद सरस्वती विरचित

॥ श्री दुर्गा करुणास्तव स्तोत्र ॥

हे माँ दुर्गे आप के चरण कमल हमारे हृदय में रहें,

आप हमारे मानस में नित्य बसो ।

हे माँ दुर्गे

दया करो,

क्षमा करो,

कृपा करो,

ममता करो,

करुणा करो,

रक्षा करो,

छोटी कन्या बनकर हमारे साथ खेला करो ॥

मंत्र - ॐ दुर्गे शरणम् मम्

अम्बे तेरी करे पुकार । दिव्य ज्योत अब लेके हाथ ॥  
दुर्गा नाम निरंतर जपते । ताप ताप मन मन तपते तपते ॥  
एंकारी सृष्टि बन जाये । हींकारी तब मन बहलाय ॥  
दिव्य याचना खंड अखंड । सार तार ते अपी परचंड ॥  
दिव्य याचना करे पुकार । रसरसते रस रस इनकार ॥  
पादय् दया का रसरस हार । दिव्य ज्योत अब तारणहार ॥  
अम्बे तुम तो सुनो पुकार । शिशु वरते तुम तारणहार ॥  
प्रकट किरण से रसना तुम । दया करुणा मुदित अपार ॥  
अर्ध देत माँ सुनो पुकार । क्षमा करुणा मुदित अपार ॥  
अाच मन तन धन अतीध्यान । सर्व याचना तारणहार ॥  
स्नान दिव्यता मतिमति गंध । अम्बे त्वरिता तन मन धन ॥  
पंचामृत सा तत्व असार । सर्व याचना तारणहार ॥  
शुद्धोदक से स्नान करावे । पुत्र मुक्ति भुक्ति संग पावें ॥  
वस्त्र द्वैत माँ सार असार । करुणा ममता सागर पार ॥  
उपवस्त्र तुम पे चढावे । दिव्य याचना वर सम पावे ॥  
कुंकूम माता वरदे वरदे । ताल दया का भरदे भरदे ॥  
रोली से माँ तिलक सजाये । दिव्य याचना करे पुकार ॥  
अक्षत अम्बे रक्षत तुम । आवरण अर्चन तारणहार ॥

कज्जल दिव्य रूप सुहावे । पुत्रो के माँ मन अति भावे ॥  
 सिंदूरार्चन द्वैत दिखावे । विदेहानंद माँ आनंद सार ॥  
 पुष्प सुगन्धित गंधीत ध्यान । दिव्य याचना करे पुकार ॥  
 पुष्प माला ग्रंथीत तार । दिव्य याचना तारणहार ॥  
 व्यष्टि - समष्टि - संकिर्तन । नाम अर्चना ज्ञानार्जन ॥  
 अष्टांगीता तैल चढावे । अम्बे तेरा रूप अति भावे ॥  
 छत्र तुम्हे माँ रजत चढाऊ । दर्पण टिकुली महालक्ष्मी दिखाऊ ॥  
 केशपाश माँ संस्करण करके । दिव्य याचना तारणहार ॥  
 कुण्डल कानों मे चमकाय । केयुर मेखला अर्पण पार ।  
 स्तुति प्रार्थना गीत गाये । अम्बे तेरा नाम सुहाये ॥  
 कुण्डलीनी की अलख जगाए । दिव्य याचना तारणहार ॥  
 धूप दिप नैवेद्य दिखाऊ । अम्बे तुमपे वारी वारी जाऊ ॥  
 नैवेद्य के व्यंजन सार । दिव्य याचना तारणहार ॥  
 तांबुल माता अर्पित करते । विदेहानंद माँ तारणहार ॥  
 विदेह तुम को नित पुकारे । दिव्य ज्योत अब तारणहार ॥  
 आचमन माँ तुम्हे करावे । ज्ञान भक्ति बैराग पावे ॥  
 ऋतुफल माता अर्पित सारा । दिव्य याचना तारणहार ॥  
 गुग्गुल ज्योती धूप दिखाये । माता माता ममता पावे ॥  
 सप्तशक्ति सब ग्रंथीत सार । दिव्य याचना तारणहार ॥  
 कवच किलकता अर्गल सार । आरती माता तारणहार ।  
 ज्योती पुजा तरणम् तरणम् । माता पुत्रो शरणम् शरणम् ॥  
 योग साधना अर्पित सार । दिव्य याचना तारणहार ॥  
 दर्शन दुर्गे दर्शित सार । दिव्य याचना तारणहार ॥  
 नासा भरणम् मुकुटा भरणम् । पादुका अर्पण रोचन सार ॥  
 नाम तेरा मन अति प्रिय सार । दिव्य याचना तारणहार ॥  
 ब्रह्म चेतना वेदान्तो । सुख दुख सारे तत्वान्तो ॥  
 योग उपासना ब्रह्मास्मी । तैजस प्राज्ञ तत्वमसी ॥  
 मेघा प्रज्ञा सबरसहार । दिव्य याचना तारणहार ॥  
 श्रवण मनन निधी निदिध्यासन । तत्वशुद्धिता आवरतन ॥  
 अम्बे मेरी सुनो पुकार । दिव्य याचना तारणहार ॥  
 शम दम चिन्तन महिमा स्मृति । दर्शन - सरवण - रूपक - वृत्ति ॥  
 कर्षण तुजला व्यापक सार । दिव्य याचना तारणहार ॥  
 अम्बे भेटी येऊ ग । बिंदु तर्पण वाहु ग ॥  
 घोस फुलांचे अर्पण करिती । व्यापक अंजन भरति तरति ॥

पिठ पुजा ते रसरसहार । दिव्य याचना तारणहार ॥  
 कुवासनांचे तोडग जाळे । आम्ही मतिमंद लेकर बाळे ॥  
 करूणा दया तव जय जगदम्बे । मुदितो आगमन कर न विलंबे ॥  
 आये तुजला दर्शन सार । दिव्य याचना तारणहार ॥  
 आई सद्गुरू रूप तुझे । चरणम् चरणम् ध्यान माझे ॥  
 संयम सवारी निग्रहो । रक्तांबरा विग्रहो ॥  
 जगदंबे तव-स्तव-घट-ध्यान । उपनिषदो माँ वेदो पुराण ॥  
 नेति नेति संगम चार । दिव्य याचना तारणहार ॥  
 विदेहानंदा समरस पान । मुर्तिमंत अनाहत ध्यान ॥  
 दशमहा विद्या दुर्गा तु । त्रिपुरा कमला ललिता तु ॥  
 निलेश्वेरी तू षड्-रस-नार । दिव्य याचना तारणहार ॥  
 कामिनी त्वरिता ऐंकारी । श्रींकारी क्लीं हींकारी ॥  
 चरण कमल तुझे रंजितसार । दिव्य ज्योत अब तारणहार ॥  
 कर्ता अकर्ता सृष्टिक्रम । आई तुजला संविक्रम ॥  
 परा-अपरा ब्रह्म विद्या तु । चेतना क्रिया स्वयं सिध्दा तु ॥  
 जगदंबे तु पालनहार । दिव्य याचना तारणहार ॥  
 रूप-रस-गंध बान्धितो । शब्द - स्पर्शता - मंदितो ॥  
 आई - प्राणो जिवनधार । दिव्य याचना तारणहार ॥  
 सर्प - रज्जुता भ्रमवत मन । रमवत - वनता - शववत तन ॥  
 ब्रह्मज्ञानो तव कृपा असार । दिव्य याचना तारणहार ॥  
 रस रस रस रस रस झनकार । दिव्य याचना तारणहार ॥  
 इडा पिंगला उर्ध्व असार । रक्त ज्योत माँ पिताकार ॥  
 ब्रह्मनाडी तो कृष्णाकार । दिव्य याचना तारणहार ॥  
 दिव्य दर्शिता स्तव-घट-हार । दिव्य याचना तारणहार ॥  
 परम शान्तितो दर्शन तव । आत्मज्ञान तो पर कलवर ॥  
 अम्बे वरदम प्रार्थितसार । दिव्य याचना तारणहार ॥  
 उज्वल भक्ति चरणम् चरणम् । शिशू विदेही शरणम् शरणम् ॥  
 शिष्य वाचति प्रेमापार । दिव्य याचना तारणहार ॥  
 अम्बे मेरी सुनो पुकार । दिव्य याचना तारणहार ॥